



Original Article

**21 वीं सदी के हिंदी साहित्य में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ :
 (ममता कालिया द्वारा रचित 'दौड़' इस उपन्यास के संदर्भ में)**

रूपाली किशोर साळुखे

शोध छात्रा

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

Manuscript ID: IJAAR-C130346

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 228 - 232

Submitted: 1 Feb. 2026

Revised: 09 Feb. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:
 रूपाली किशोर साळुखे

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22786199

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22786199>



Creative Commons



प्रस्तावना:

हिंदी साहित्य में आरंभ से ही भारतीय समाज, संस्कृति और परिवार प्रतिबिंबित होता रहा है। 21 वीं सदी में हिंदी साहित्य ने अपने कथानकों में विविधता और यथार्थवाद का समावेश किया है। साहित्य ने इस दौर में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और पारिवारिक बंधनों के बीच संघर्ष को केंद्र में रखा है। इस सदी के लेखक चमत्कार एवं भ्रम पैदा करने वाले आकर्षण में नहीं बंधा है। साहित्य की विभिन्न विधाओं में 21वीं सदी का परिवार परिलक्षित हुआ है। 21 वी सदी में सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिवर्तनों के कारण परिवार व्यवस्था में बड़ा ही परिवर्तन आ रहा है। इन परिवर्तनों के कारण अनेक पारिवारिक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। हिंदी साहित्य में इन परिवर्तनों से निर्माण समस्याओं का वास्तववादी चित्रण मिलता है। रोजगार के कारण स्थानांतरण तथा शहरीकरण के कारण संयुक्त परिवार बिखरकर एकल परिवार में परिवर्तित हो रहे हैं, जिस कारण परिवार में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। जैसे - वृद्धों की देखभाल, बच्चों की परवरिश, घर की जिम्मेदारी, बढ़ती महंगाई, करियर में प्रतिस्पर्धा इन कारणों से परिवार में तनाव बढ़ रहा है। भौतिक सुख की चाह में परिवार आहत हो रहे हैं, रिश्तों में दरार पड़ रही है। व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएँ रिश्तों में भावनात्मक दूरी बढ़ा रही हैं। 21वीं सदी के हिंदी साहित्य में भारतीय परिवार का परिदृश्य और उनकी समस्याओं का अवलोकन होता रहा है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

रूपाली किशोर साळुखे. (2026). 21 वीं सदी के हिंदी साहित्य में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ: (ममता कालिया द्वारा रचित 'दौड़' इस उपन्यास के संदर्भ में). *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 228 - 232. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22786199>

‘दौड़’ उपन्यास में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ:

‘दौड़’ उपन्यास में चित्रित पारिवारिक समस्याओं का अवलोकन करने से पहले परिवार इस शब्द का अर्थ समझना

आवश्यक है। परिवार समाज की सबसे बुनियादी, छोटी और महत्वपूर्ण ईकाई है। ‘परिवार’ शब्द की व्युत्पत्ति मुख्य रूप से संस्कृत से मानी जाती है, जिसका अर्थ है ‘परिव्रियते अनेन’



जिसका अर्थ है वह समूह जो हमें सुरक्षा प्रदान करता है। यह शब्द प्राकृत के 'परिवार' शब्द से संबंधित और अक्सर किसी आवरण या रक्षा के अर्थ में भी प्रयोग होता है, जो परिवार के रक्षक और साथ होने के भाव को दर्शाता है। अगर परिवार के सदस्य संकट और खुशी के समय एक-दूसरे को मानसिक शांति और प्रेम प्रदान करते हैं तो ही उस परिवार का हर सदस्य अपने आप को सुरक्षित महसूस करता है। एक परिवार नैतिक मूल्य तथा दृष्टिकोण को मिलकर साझा करता है किंतु वर्तमान युग में नैतिक मूल्यों की लगातार गिरावट हो रही है। जिसके कारण पारिवारिक समस्याएँ बढ़ रही हैं। इन समस्याओं का वास्तविक चित्रण 21वीं सदी के दौड़ इस उपन्यास में किया गया है।

21 वी सदी के आगमन में ही ममता कालिया द्वारा लिखित 'दौड़' एक लघु उपन्यास है। इस उपन्यास में 21 वी सदी के भारतीय परिवार व्यवस्था पर व्यवसाय जगत तथा बाजारवाद के प्रभाव को दर्शाने वाली कथा है। इसमें व्यक्तिगत जीवन तथा पारिवारिक संबंधों में बाजारवाद के प्रभाव के कारण किसप्रकार पारिवारिक समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं, यह चित्रित किया गया है। परिवार के आपसी रिश्तों में भावनाओं का स्थान धीरे-धीरे कम होता जा रहा है और धन का महत्व बढ़ता जा रहा है। माता-पिता अपनी जीवन की सारी जमा पूंजी बच्चों को अच्छी परवरिश तथा शिक्षा देने में खर्च करते हैं लेकिन वृद्धावस्था में वही माता-पिता अकेले हो जाते हैं।

इस उपन्यास में राकेश और रेखा तथा उनके दो बेटे पवन और सघन की कहानी है। राकेश, रेखा, पवन, सघन, स्टेला जैसे लोग आज व्यवसाय जगत् की परिस्थितियों में घिरकर हालातों के आगे मजबूर लगते हैं। सभी यह जानते हैं कि इस तेज़ दौड़ती जिन्दगी में किसी एक जगह बैठे रहकर अपना कैरियर और जीवन में स्थिरता प्राप्त करना असम्भव है। इसीलिए मानवीय सम्बन्धों में जिस तेजी से बदलाव आया है,

रिश्तों से अधिक महत्वपूर्ण कैरियर हो गया है। इससे यही साबित होता है कि आज के आधुनिक जीवन में वास्तव में कैरियर और ऐशो-आराम की जिन्दगी ही सब कुछ है। नई पीढ़ी के लिए बाकी सबकुछ महत्वपूर्ण नहीं है। इस उपन्यास में मानवीय सम्बन्धों के अस्थिरता एवं खिंचाव को पवन, सघन तथा स्टेला के जरिए बखूबी चित्रित किया है। जब पवन इलाहाबाद अपने माँ-बाप से मिलने जाता है तो वे लोग उसे इलाहाबाद के आस-पास ही कहीं जॉब ढूँढने को कहते हैं। उन्हें आशा थी कि इस तरह वे अपने बेटे के कैरियर में रुकावट भी नहीं बनेंगे और पवन भी उनके पास रह सकेगा। लेकिन पवन की सोच और दृष्टिकोण कुछ अलग ही होते हैं।

पवन अपने पिता के कलकत्ते जाकर बसने के सलाह पर कहता है, "पापा मेरे लिए शहर महत्वपूर्ण नहीं, कैरियर है। वह अपने माता-पिता को अपने साथ राजकोट चलने के लिए कहता है लेकिन माता-पिता उनका शहर छोड़ने को तैयार नहीं हैं। रात जब पवन अपने कमरे में चला गया तब राकेश पांडे ने पत्नी से कहा, 'आज पवन की बातें सुन कर मुझे बड़ा धक्का लगा। इसने तो घर के संस्कारों को एकदम ही त्याग दिया।' 'पहले तुम्हें भय था कि बच्चे कहीं तुम जैसे आदर्शवादी न बन जाएँ। इसीलिए उसे एम.बी.ए. कराया। अब वह यथार्थवादी बन गया है तो तुम्हें तकलीफ हो रही है। जहाँ जैसी नौकरी कर रहा है, वहीं के कायदे-कानून तो ग्रहण करेगा।' इस संवाद द्वारा हमें यह दृष्टिगत होता है कि माता-पिता बच्चों को अच्छी शिक्षा देकर अपना कैरियर बनाने के काबिल बना देते हैं किंतु अपने दूर नहीं होने देना चाहते हैं। यह इस सदी के ज्यादातर माता-पिताओं की समस्या इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका हमारे सामने प्रस्तुत करती हैं।

जितने दिन पवन घर पर रहता है उतने दिन उसका व्यवहार अपने माता-पिता से, विशेषकर माँ से एक पराए व्यक्ति



जैसा रहता है। यहाँ तक कि धोबी से इस्त्री होकर आए कपड़ों के लिए पवन ज्यादा पैसे दे देता है तो उसकी माँ उसे समझाती है कि यदि वह टूरिस्ट की तरह पैसे देता रहेगा तो ये लोग सिर चढ़ जायेंगे। लेकिन पवन अपनी माँ की इस बात पर हंगामा खड़ा कर देता है। अपने दफ्तर में मिल रही इज्जत का हवाला देकर माँ को ताने दे बैठता है। पवन अपनी जिंदगी अपने हिसाब से जीना चाहता है। वह शहरी तौर-तरीके अपनाने लगा है। शहर में पवन एक करियर उन्मुख युवती स्टेला से मिलता है वह शादी के पहले से ही उसके साथ रहता है, और माता-पिता की सहमति के बिना उससे शादी करने का फैसला करता है। स्टेला से मिलाने के लिए पवन अपने माता-पिता को राजकोट बुलाता है। पवन की माँ जब बिना कोई खबर दिए राजकोट पहुँच जाती है तब पवन बहुत खुश होता है। लेकिन माँ स्टेला को मिलने के उपरांत पवन से कहती कि यह बिल्कुल तुम्हारे लायक नहीं है। उस समय पवन माँ से कहता है कि यही बात तुम्हारे बारे में पापा से दादी ने कही थी। क्या उन्होंने दादी माँ की बात मानी थी, बताइए? पवन की यह बात सुनकर रेखा का सर्वांग संताप से जल उठता है। उन्हें अपने साथ स्टेला की तुलना बिल्कुल पसंद नहीं आती। स्टेला आए दिन रेखा के लिए कोई ना कोई उपहार लेकर आती है लेकिन रेखा को यह चीज बिल्कुल भी पसंद नहीं थी। स्टेला और पवन दोनों के परिवार बिल्कुल ही अलग थे। उनके परिवारों की संस्कृति, परम्पराएं, रहन-सहन, खान-पान के तौर तरीके बिल्कुल मेल नहीं खाते थे। अपने परिवार में किसी अजनबी लड़की को शामिल करना एक परिवार के लिए बहुत ही मुश्किल की घड़ी होती है। भारतीय समाज में विवाह केवल दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि दो परिवारों का संबंध माना जाता है। जब कोई लड़की विवाह के बाद नए घर में आती है, तो वह उस परिवार के लिए पहले अजनबी होती है। ऐसे में कई भावनात्मक, सामाजिक और

व्यवहारिक चुनौतियाँ सामने आती हैं और अनेक उन्हें समस्याएँ सृजना पड़ता है। उन समस्याओं का बखूबी चित्रण इस उपन्यास में चित्रित हुआ है।

स्टेला का प्रभाव पवन के घर की हर छोटी-छोटी चीजों पर रेखा को दिखाई दे रहा है, जो उसे बिल्कुल पसंद नहीं है। पवन के घर जो रसोईया आता है उसने पहने हुए कपड़े पवन के होते हैं। वह रेखा को पूछता है कि वह कितनी रोटियाँ खाने वाली है यह बात रेखा को बड़ी अजीब लगती है। खाना नाप-तोलकर बनाना उसे बिल्कुल पसंद नहीं था, रेखा को लगता है कि इस नाप-तोल के पीछे जरूर स्टेला का हाथ होगा। उसका बेटा तो ऐसा हिसाबी कभी नहीं था। रेखा अहमदाबाद जाने से एक दिन पहले पवन और स्टेला उसे एक शीशे की कढ़ाई वाली भव्य चादर उपहार में देते हैं। पर वह चादर रेखा को पसंद नहीं आती है वह उसे अपने साथ ले जाने से मना करती है। उस रात रेखा को सपने में बार-बार यही आता रहा कि उसके बिस्तर पर शीशे वाली चादर बिछी है। जिस करवट वह लेटती है उसके शरीर पर वह शीशे टूटकर चुभ रहे हैं। इस उपन्यास में यह प्रसंग रेखा की मनस्थिति का एक प्रतीकात्मक रूप में चित्रण करता है। उसके बेटे जिंदगी पर किसी दूसरे व्यक्ति प्रभाव उसे बिल्कुल अच्छा नहीं लगा है। रेखा को लगता है उसका बेटा अब उससे दूर हो जाएगा। स्टेला का पवन की जिंदगी में आना रेखा को काँटे की तरह चुभ रहा था। पवन ने स्टेला से शादी करने के लिए सिर्फ किसी स्वामी जी की सलाह ली थी और वह शादी भी स्वामी जी के शिविर में ही करना चाहता है। रेखा इस बात से बहुत बेचैन है कि उसका बेटा अपनी जिंदगी के फैसलों में अपने माता-पिता की राय लेना भी जरूरी नहीं समझता।

पवन रेखा से कहता है आप थोड़े दिनों के लिए स्वामी जी के आश्रम में जाकर रहो। आपकी बेचैनी, परेशानी, बेवजह



चिढ़ने की आदत सब ठीक हो जाएगी।' इस बात पर रेखा उसे कहती है मैं जैसी भी हूँ ठीक हूँ। कोई ठाली बैठी नहीं हूँ जो आश्रमों में जा कर रहूँ। नौकरी भी करनी है।' तब पवन उसे कहता है कि छोटी-सी नौकरी है तुम्हारी छोड़ दो, चैन से जियो माँ। 'इसी छोटी-सी नौकरी से मैंने बड़े-बड़े काम कर डाले पुन्नु, तू क्या जानता नहीं है?' 'पर आप में जीवन दर्शन की कमी है। स्टैला के माँ बाप को देखो। अपनी लड़की पर विश्वास करते हैं। उन्हें पता है वह जो भी करेगी, सोच समझ कर करेगी।' ममता कालिया जी ने इन पात्रों के द्वारा दो पीढ़ियों तथा परिवारों के बीच के सोच के अन्तराल को दर्शाकर उनकी समस्या को उजागर करने का प्रयास किया है।

स्टैला बाजारवाद की नीतियों को आत्मसात् करती हुई कामयाबी की दौड़ में पवन की भागीदार बनती है। शादी के बाद स्टैला घर आती है तो दो दिनों के बाद वह सलवार सूट पहनना छोड़कर जींस टॉप पहने लगती है। उसे खाना बनाना भी नहीं आता है इसलिए रेखा उसे कहती है कि थोड़ा बहुत कुकिंग सीख ले। वह यहाँ माता-पिता का आशीर्वाद लेने आया था, उपदेश नहीं। 'माँ, जब से मैंने होश सँभाला, तुम्हें स्कूल और रसोई के बीच दौड़ते ही देखा। मुझे याद है जब मैं सो कर उठता तुम रसोई में होती और जब मैं सोने जाता, तब भी तुम रसोई में होती। तुम्हें चाहिए कि स्टैला के लिए जीवन भट्टी न बने। जो तुमने सहा, वह क्यों सहे? पवन एक नई पीढ़ी का युवक है वह अपनी पत्नी की भावनाओं को समझ रहा है लेकिन माँ को समझाना उसके लिए बहुत बड़ी समस्या है। इस प्रकार परिवार के सदस्यों के मन में भावनात्मक दूरी बढ़ती है, जिससे झगड़े और गलतफहमियाँ जन्म लेती हैं। समाज के अनेक परिवारों में यह समस्या हमें नजर आती है। सास को लगता है कि बहू उसकी जगह ले रही है, तो उसके मन में असुरक्षा और उपेक्षा का भाव उत्पन्न होता है। उसे ऐसा महसूस हो सकता है कि घर

में उसका महत्व कम हो रहा है या बेटे का स्नेह उससे दूर हो रहा है। इस समस्या का समाधान खुली बातचीत, आपसी सम्मान और विश्वास से ही संभव है। परिवार का प्रत्येक सदस्य एक-दूसरे की भावनाओं को समझने का प्रयास करता है, तो रिश्ता मजबूत बनता है।

पवन का छोटा भाई सघन इंजीनियरिंग पास कर लेता है और ताइवान चला जाता है रेखा और राकेश को अपने बच्चों पर पूरा विश्वास कि वह उन्हें कभी अकेले छोड़कर किसी दूसरे स्थान नहीं बसेंगे। परंतु पवन और सघन अपनी नौकरी के स्थान पर बस जाते हैं और उन माता-पिता के पास वापस आने से इनकार कर देते हैं जिन्होंने बच्चों के लिए अपना पूरा जीवन जिया। वे जिस गली में रहते थे उसे बुढ़ा-बुढ़ी गली कहा जाता है, क्योंकि सभी के घरों के चिराग अपने माँ-बाप को छोड़कर करियर बनाने के लिए दूसरे शहरों तथा विदेश चले जाते हैं। रह जाते हैं तो सिर्फ बूढ़े माँ-बाप, एक कार, एक कुत्ता और उनके घरों में उनके बच्चों द्वारा भेजी गए महंगी चीजें। लेकिन रेखा को इन चीजों की कोई जरूरत नहीं थी। जरूरत थी तो बस उसके बेटों के प्यार की, उनके एक साथ परिवार में रहने की।

जब पवन उन्हें अपने चेन्नई जाने और स्टैला के राजकोट और अहमदाबाद में बिजनेस सम्भालने की बात कहता है तब रेखा और राकेश दोनों पवन को समझाते हैं कि शादी के बाद साथ रहना जरूरी होता है। इसपर पवन कहता है कि मैं अपना कैरियर, अपनी आजादी कभी नहीं छोड़ूंगा। स्टैला चाहे तो अपना बिजनेस चेन्नई ले चले। यह उपन्यास कमजोर पारिवारिक संबंधों की तथा पारिवारिक समस्याओं यथार्थवादी तस्वीर खींचता है। कैरियर पीछे भागते-भागते युवा पीढ़ी भावनाशून्य हो गई है। उनके लिए पारिवारिक रिश्तों की कोई अहमियत नहीं। यह उपन्यास 21 वीं सदी के युवा वर्ग की एक



अलग सोच और अलग मानसिकता के कारण निर्माण समस्याओं का प्रतिनिधित्व करता है।

21वीं सदी के अन्य कहानीकारों ने अपनी कहानियों में बिगड़ते पारिवारिक रिश्ते, समस्याओं का चित्रण किया है। इस सदी की जानी-मानी हस्ति सुप्रसिद्ध लेखिका आभा श्रीवास्तव जीने 'काली बकसिया' इस कहानीसंग्रह में अपनी कहानियों के माध्यम से विशेष रूप से परिवार, स्त्री-जीवन, रिश्तों के तनाव, संस्कार और बदलते पारिवारिक मूल्यों को बहुत संवेदनशील ढंग से चित्रित करने का प्रयास किया है। इसमें कुल 16 कहानियाँ संकलित हैं। उनकी 'तर्पण' इस कहानी में वर्णित बड़ी बहन ईर्ष्या और द्वेष के कारण अपनी छोटी बहन की पढाई पूर्ण नहीं होने देती। माता-पिता से कहकर उसकी शादी जल्दी करवा देती हैं। भाई के साथ मिलकर छोटी बहन को संपत्ति के लालच में अपने माता-पिता से दूर करती हैं। माँ की मृत्यु के उसके गहने काटकर शरीर पर से उतरवा लिए जाते हैं। लेकिन कहानी के अंत में बड़ी बहन के बेटे उसकी उपेक्षा करते हैं और उसे वृद्धाश्रम में छोड़ देते हैं वही पर उसकी मृत्यु हो जाती है। इस कहानी के माध्यम से पारिवारिक मूल्यों की गिरावट द्वारा पारिवारिक समस्याओं को उजागर किया है। इस कहानी के बारे में लेखिका कहती हैं कि इस कहानी का अक्षर-अक्षर सत्य है ऐसे परिवार भी हमारे आसपास होते हैं। 'कुलतारक' यह भी उनकी कहानी माता-पिता की उपेक्षा, बहन के प्रति रूखापन और परिवार की जिम्मेदारियों को झुठलाना इन समस्याओं का चित्रण किया है।

निष्कर्ष:

संक्षेप में 'दौड़' इस उपन्यास पर विहंगम दृष्टि डालने के बाद हमें पारिवारिक समस्याओं का चित्रण आँखों की तरह दिखाई देता है। जिसमें समाज स्वयं का प्रतिबिम्ब देख सकता है। हिंदी साहित्य तथा में परिवार की विविध समस्याओं के यथार्थ दर्शन हमें मिलते हैं। 21वीं में भी यथार्थवाद का चित्रण करने की कुछ सीमाएं हैं उन सीमाओं को लांघने का कुछ साहित्यकार प्रयास नहीं कर पाते हैं। जीवित किरदार, जीवत घटनाएँ सुरक्षित साहित्य निर्माण के लिए सही नहीं मानी जाती। फिर भी कुछ साहित्यकार खतरा उठाकर यथार्थवादी कृतियों का निर्माण करते हैं। जिस तरह मुक्तिबोध कहते हैं-अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे उठाने ही होंगे, तोड़ने ही होंगे मठ और गढ़ सब ॥ अंततः हम यह कह सकते हैं कि इस यथार्थवादी हिंदी साहित्य को पढ़कर समाज से हम यही अपेक्षा कर सकते हैं कि वह अपने परिवार के सदस्यों साथ सम्मानजनक व्यवहार करें तथा स्त्रियों के प्रति दुर्व्यवहार न करें। वृद्धों के प्रति उनका व्यवहार संवेदनाशील बना रहे। पारिवारिक समस्याओं का चित्रण करनेवाली साहित्यिक कृतियाँ पढ़कर समाज पर उसका थोड़ा भी प्रभाव पड़ता है तो समाज में परिवार संस्था मजबूत बनेगी।

संदर्भ सूची:

1. 'दौड़' उपन्यास ममता कालिया प्रकाशन : वाणी प्रकाशन
2. 'काली बकसिया' कहानीसंग्रह आभा श्रीवास्तव प्रकाशन हिन्द युग्म